प्रकाशनार्थ

श्रीराम कथा

20 जुलाई, 2024 गोरखपुर।

गुरु पूर्णिमा पर्व के पावन अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर स्थित महन्त दिग्विजय नाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित साप्ताहिक श्रीरामचरित मानस कथा के षष्ठम दिवस में कथा व्यास सन्त हृदय बालकदास जी महाराज ने राम नाम संकीर्तन के महत्त्व को बताते हुए कहा कि राम नाम का जप एक ऐसी औषधि के समान है, जिसे अगर सच्चे हृदय से जपा जाए तो सभी आदि-व्याधि दूर हो जाती हैं, मन को परम शांति मिलती है।

उन्होंने कहा कि जब लंका तक पहुंचने के लिए सेतु बनाया जा रहा था, तब सभी को संशय था कि क्या पत्थर भी पानी पर तैर सकते है, क्या तैरते हुए पत्थरों का बांध बन सकता है ? इस संशय को मिटाने के लिए प्रत्येक पत्थर पर राम नाम लिखा गया। सेतु बनने से पूर्व हनुमान जी भी सोच में पड़ गए कि बिना सेतु के मैं लंका कैसे पहुंच सकता हूं, लेकिन राम का नाम लेकर वह एक ही फलांग में समुद्र पार कर गए।

उन्होंने निषादराज गुह एवं केवट के प्रसंग की अति सुंदर मार्मिक व्याख्या की।

उन्होंने कहा कि जिस समय भगवान वनवास के लिए अयोध्या से प्रस्थान कर निषादराज गुह राज्य में पहुंचे। निषादराज को यह समाचार मिला तो वह भाव विभोर होकर प्रभु के स्वागत में खड़े हो गए और पूरी आत्मीयता के साथ प्रभु राम का निषाद राज ने स्वागत किया। प्रभु श्रीराम ने निषादराज को हृदय से लगाकर मानव समाज में यह संदेश दिया कि समाज का प्रत्येक वर्ग आदर एवं सम्मान के योग्य है।

उन्होंने कहा कि यह केवट का प्रभु राम के प्रति विशुद्ध प्रेम ही था कि वनवास के चौदह वर्ष की समाप्ति तक गंगा के किनारे बैठकर उनकी वापसी की प्रतीक्षा की। प्रबल इच्छा हो तो मनुष्य प्रभु को पा सकता है।

उन्होंने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के आदर्श समाज में आज भी कायम है। भगवान प्रेम भाव रखन् वाले का हमेशा कल्याण करते हैं। कहा कि भरत

ने भगवान राम के वनवास जाने के बाद खड़ाऊं को सिर पर रखकर राजभोग की बजाय तपस्या की।

सन्त हृदय व्यास जी नें कहा कि जीवन में भक्ति और उपासना का अलग महत्व है। निष्काम भाव से भक्ति करने वाले की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

कथा के विश्राम में व्यास पीठ की आरती की गयी।

संचालन श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ॰ अरविन्द चतुर्वेदी ने किया।

इस अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, कालीबाडी के महन्त रविन्द्रदास जी, हनुमान मन्दिर के महन्त रामदास,योगी धर्मेन्द्रनाथ सहित यजमानगण, सन्तगण व अनेक श्रद्धालु जन उपस्थित रहे।